| | | |
|---|---|---|
| ١٤ | زين الشباب وان أثوابها استلبت | على الحشية يوما زانها السلب |
| ١٥ | تريك سنة وجه غير مقرفة | ملساء ليس بها خال ولا ندب |
| ١٦ | إذا أخولذة الدنيا تبطنها | والبيت فوقهما بالليل محتجب |
| ١٧ | سافت بطيبة العرنين ريانها | بالمسك والعنبر الهندي مختضب |
| ١٨ | تزداد للعين إبهاجا إذا سفرت | وتحرج العين فيها حين تنتقب |
| ١٩ | لمياء في شفتيها حوة لعس | وفي اللثات وفي انيابها شنب |
| ٢٠ | كحلاء في برج صفراء في نعج | كأنها فضة قد مسها ذهب |
| ٢١ | والقرط في حرة الذفري معلقة | تباعد الحبل منها فهو يضطرب |
| ٢٢ | تلك الفتاة التي علقتها عرضا | إن الكريم وذا الاسلام يختلب |
| ٢٣ | لست بفاحشة في جارتها | ولا تعاب ولا ترمى بها الريب |
| ٢٤ | ان جاورتهن لم ياخذن شيمتها | وإن وشين بها لم تدر ما الغضب |
| ٢٥ | صمت الخلاخيل خود ليس يعجبها | نبج الاحاديث بين الحي والصخب |
| ٢٦ | وجها لي سواد الليل مرتعدا | كأنها النار تخبو ثم تلتهب |
| ٢٧ | واسو أتاه ثم يا ويلي ويا حربي | اني اخو الجسم فيه السقم والكرب |
| ٢٨ | ليالي اللهو يطبيني فاتبعه | ~~اني اخو الجسم فيه السقم و~~ |
| ٢٨ | ... | كانني ضارب في غمرة لعب |
| ٢٩ | لا أحسب الدهر يبلي جدتي أبدا | ولا تقسم شعبا واحدا شعب |
| ٣٠ | زار الخيال لمي هاجعا لعبت | به التنائف والمهرية النجب |
| ٣١ | معرس في بياض الصبح وقعته | وسائر السير الى ذاك منجذب |
| ٣٢ | اخا تنائف أغفى عند ساهمة | بأخلق الدف من تصديرها جلب |
| ٣٣ | تشكو الخشاش ومجرى النسعتين كما | أن المريض الى عواده الوصب |
| ٣٤ | كأنها جمل وهم وما بقيت | إلا النحيزة والالواح والعصب |
| ٣٥ | والعيس من عاسج او واسج خببا | ينحزن من جانبيها وهي تنسلب |
| ٣٦ | لا تشتكي سقطة منها وقد رقصت | بها المفاوز حتى ظهرها حدب |
| ٣٧ | كأن راكبها يهوي بمنخرق | من الجنوب اذا ما ركبها نصبوا |
| ٣٨ | تخدي بمنخرق السربال منصلت | مثل الحسام إذا اصحابه شحبوا |

Copyright © King Saud University

Created with PDFsharp 1.2.1269-g (www.pdfsharp.com)